SINDHI COLLEGE

20 YEARS EXCELLENCE IN EDUCATION

Multilingual National Conference On

"An Escape into Literature to Overcome Existential Crisis"

25th and 26th August, 2022

M.E.S. Institute of Management Rajajinagar, Bangalore - 10.

Organized by
Language Departments

SINDHI COLLEGE

Reaccredited by NAAC, (Permanently affiliated to Bengaluru City University
Recognized by UGC under 2(f) & 12(B), ISO 9001:2015 Certified Institution

SPONSORS: SINDHI SEVA SAMITI

#33/2B, Hebbal, Kempapura, Bengaluru-560024
Phone: 080-23637543/44, 41178288 Fax: 2363754

https://www.sindhicollege.com E-Mail: languageconference22@gmail.com

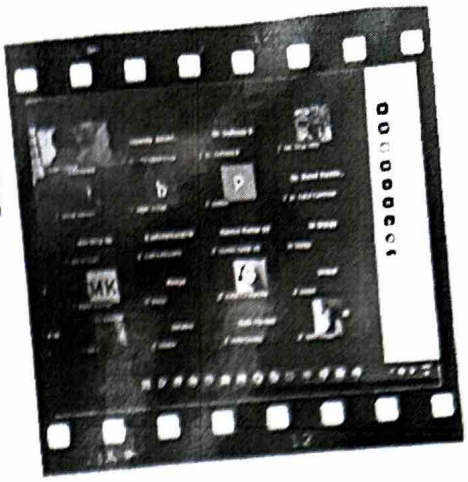

Sindhi Group of Educational Institutions

Sindhi College
Sindhi Institute of Management
Sindhi Evening Degree College
Sindhi PU College
Sindhi PU Evening College
Sindhi High School, Hebbal
Sindhi High School, KK Road
Sindhi Seva School
Sindhi Academy of Skills

SINDHI COLLEGE

SINDHI COLLEGE

Permanently affiliated with Bengaluru City University
Recognized by UGC under 2(f) & 12(B), ISO 9001:2015 Certified Institution

M.E.S. Institute of Management Rajajinagar, Bangalore - 10.

Sponsors: Sindhi Seva Samiti

#33/2B, Hebbal, Kempapura, Bengaluru-560024
Phone: 080-23637543/44, 41178288, Telefax: 23637543

E-Mail: languageconference22@gmail.com

ISBN 978-93-5701-603-2
9 789357 016032

अनुक्रम

SL. No.	NAME	COLLEGE NAME	TITLE
1.	Chidananda Naik K R	Silicon City College	आधुनिक हिंदी साहित्य में नैतिकता-पुरुष और स्त्री स्वतंत्रता
2.	Dr Rakhi K Shah	जैन (अभिमत पात्र विश्वविद्यालय)	हिंदी साहित्य में धर्म एवं आस्था से संबंधित नारी समस्याएँ
3.	H D Sowmyashree	Surana College	Sharad joshi kee pramukh rachnao me saamajik vyngya samasya
4.	Prof.Rekha P Menon	Indo Asian women's degree college	Parivarik evam samajik pariprekshya mein Ramcharit Manas
5.	Dr. Sunita Sah	श्री वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ साइंस एंड मैनेजमेंट स्टडीज	सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना के उन्नयन में साहित्य की भूमिका एवं उपादेयता
6.	Uma Chaudhary	New Horizon College	हिन्दी साहित्य की उपयोगिता वर्तमान समस्याओ के सन्दर्भ मे
7.	Savitha Kumari B	ISME, Chembanahalli	Ram charit manas me nihit parivarik mulyon ka vartamaan sandarbh me mahatva
8.	Dr. Kanchan S Kudchikar	MES Institute of Management	लेखिकाओं का उपन्यास साहित्य; नारीवाद के संदर्भ में
9.	डॉ. विजयकुमार सूर्यवंशी	सिंधी पी यू कॉलेज	नारी समस्या पर आधारित साहित्य
10.	Dr. Latha N Mukri Asst. Professor	Jain College, Vasavi Campus	Naari Samasya per aadharit Hindi Sahitya
11.	Dr. Ranjeeth Kumar Pratap	DRDO Officer	राष्ट्र निर्माण के संदर्भ मे सामाजिक समस्याओं, जड़ता और कुरीतियों के समाधान मे साहित्य का योगदान

लेखिकाओं का उपन्यास साहित्य; नारीवाद के संदर्भ में ।

प्रस्थावना:

परंपरागत कर्तव्यों को निभाने में ही स्त्री लगी रहती थी। लेकिन आज स्त्री जागृत हो चुकी है, अपने अस्तित्व की पहचान बनाने में कामयाब हो रही है। अपने अस्तित्व का विकास उसने किया है। स्त्री आज घर परिवार तक सीमित न रहकर शिक्षा, खेल प्रशासन, विज्ञान, साहित्य, राजनीति आदि सभी क्षेत्र में अपना स्थान बना चुकी है। नारी के घर से बाहर निकलने के कारण वह अनेक लोगों के संपर्क में आती है जिससे उसकी मानसिक सोच में बदलाव आया है। महिला उपन्यासकारों ने मुख्यता नारी जीवन के विविध रूपों का चित्रण किया है। प्रायः आधुनिक नारी का चित्रण किया है। घर और बाहर के बीच के फासले को पार करते समय आने वाली हर समस्याओं से जूझते हुए उनका समाधान करने वाली नारी का चित्रण किया है। विशेष रूप से पहचान कर स्वयं सहे, झेले हुए यथार्थ का मार्मिक चित्रण करती है।

जैसे जैसे समय बदलता गया वैसे वैसे महिला उपन्यासकारों के विचार भी बदलते गए। आज की लेखिकाओं ने नए सामाजिक संदर्भ में उन पुरानी समस्याओं के साथ-साथ यथा संभव उनकी आज की ज्वलंत समस्याओं को जैसे मानसिक द्वंद्व, ऊब, वासना आदि का चित्रण किया है। साहित्य के क्षेत्र में उसने अपनी प्रतिभा का परिचय खूब दिया है। अनेक महिला उपन्यासकारों में से मुख्य रूप से शिवानी, कृष्णा सोबती, राजीव सेठ, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, निरुपमा सोबती, प्रभा खेतान, मैत्रेई पुष्पा इन महिला उपन्यासकारों को मैंने लिया है।

स्त्री-विमर्श:

सन 1975 में पनपा स्त्री विमर्श एक ऐसा आंदोलन है जो पाश्चात्य देशों से होते हुए हमारे देश में आया है। स्त्री-विमर्श या स्त्री-वाद नारी की अस्मिता की खोज करते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता के साथ स्त्री को खुला आकाश देकर उसे मानव के रूप में जीने लायक वातावरण बनाकर नारी के सशक्तिकरण पर बल देता है| नारीवाद यानी पुरुषों से द्वेष या उनका विरोध नही। यदि मृणाल पांडे के शब्दों में कहें तो, "नारीवाद पुरुषों का नहीं उनकी मान्यता घटानेवाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिवाद करता है जो मर्दानगी के नाम पर गाढ़ा गया है और जिसके पीछे झूठी अहमन्यता और उत्पीड़क प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं|" प्रज्ञा शुक्ला के अनुसार, "नारी पुरुष सत्ता विकल्प न चाहते हुए उसके समक्ष रखकर उसकी साजिदारी से अपने मानवीय रूप से समाज में प्रतिष्ठित स्थान चाहती है। "

भारतीय समाज पुरुष-प्रधान होने के कारण लेखकों द्वारा लिखा हुआ स्त्री संबंधित साहित्य और लेखिकाओं द्वारा लिखा हुआ स्त्री संबंधित साहित्य में अंतर हो सकता है इसी कारण शायद कुछ समीक्षको ने लेखिकाओं द्वारा लिखे गए साहित्य को ही स्त्री विमर्श का साहित्य माना है। यह कहां तक उचित है यह दूसरी बात है पर महिला लेखन में स्त्री विमर्श विपुल रूप में मिलता है जो प्रगतिशील है|

महिला उपन्यासों में नारीवाद

शिवानी के 'विवर्त' उपन्यास में ठगी गई नारी का चित्रण है। उपन्यास की नायिका ललिता अत्यंत सुंदर है और एक गांव में अध्यापिका है। लंदन प्रवासी सुधीर ने उसकी सुंदरता से प्रभावित होकर उस से विवाह किया। परंतु यह बात उसने छिपाए रखी थी कि अंग्रेजी युवती से उसका विवाह पहले ही हो चुका है। इस बात का पता तब चलता है जब ललिता सुधीर की खबर लेने लंदन पहुंचती है। सुधीर की पत्नी फिलीज से मिलकर उसे धक्का लगता है। एक नीग्रो युवक आर्थर की सहायता से किसी प्रकार वह भारत लौट आती है। इस उपन्यास में शिवानी जी ने ठगी हुई नारी का चित्रण किया है। पुरुष किस प्रकार स्त्री को ठगता है इसका चित्रण किया है। स्त्री की समस्या नारी का दर्द, पीड़ा,यातनाओं को दर्शाया गया है।

कृष्णा सोबती का 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में नायिका 'रति' बचपन में बलात्कारी होती है। परिणाम स्वरुप वह असहिष्णु, क्रूर और फ्रिजिड होती है। अंत में दिवाकर से प्रभावित होकर उसे पूर्ण समर्थन कर देती है। इस प्रकार उसे काम विकृति से मुक्ति मिल जाती है। कृष्णा सोबती ने इस उपन्यास में परंपरागत नारी मुद्रा के विपरीत नारी मन का स्वतंत्र या स्वच्छंद आलेखन कर साहसिक कदम उठाया है।

राजी सेठ के 'तत्सम' उपन्यास में बसुधा के पति निखिल का दुर्घटना में निधन हो जाता है। बसुधा अपने लिए ऐसे पति की तलाश करती है जो केवल प्रेमी या स्वामी की भूमिका अदा न करें बल्कि एक सच्चे सहयात्री की भूमिका अदा करे। लंबी यात्रा के बाद वह 'आनंद' को वरण करती है। पति की मौत से जिंदगी नहीं रुकती यह बताते हुए राजी सेठ ने यहां नारी जीवन की सार्थकता का विवेचन किया है।

मृदुला गर्ग नारी विमर्श की एक विशिष्ट लेखिका है। उनका उपन्यास 'मैं और मैं' में ऐसी स्त्री अस्मिता की खोज है, जो कथा लेखिका भी है। नायिका माधवी अपने पति और बच्चों के साथ सुविधा और शांति का जीवन व्यतीत करती है। उसके जीवन में कौशल का प्रवेश होता है जो कुरुप,कुंठित काम पीडित किंतु प्रभावशाली है। माधुरी से लेखन चर्चा के बहाने जुड़ा रहना चाहता है। पर माधवी उसके ही झूठ प्रपंच और षड्यंत्र में उससे खेलती है और अंत में उसे पराजित कर सफल भी होती है। इस तरह लेखिका ने नारी मन की स्थिरता और पुरुष की लोलुपता का सूक्ष्म चित्रण किया है।

ममता कालिया के 'बेघर' उपन्यास में लेखिका ने संस्कारबध्द पुरुष मन पर गहरी चोट की है। बेघर का नायक परमजीत मुंबई में रहते संजीवनी भरुचा के संपर्क में आता है। घनिष्ठता बढ़ने पर प्रथम संभोग में युवती के शरीर से खून नहीं आया इससे आहत हो जाता है और उस पर अनुमान करता है कि अन्य पुरुषों से भी उसका संबंध रहा होगा। आखिर में वह माता-पिता द्वारा तय हुई लड़की से शादी करता है जो झगड़ालू, स्वार्थी, गंवार और संवेदन शून्य है। ऐसी पत्नी के साथ जीवन बिताते वह टूटता है और दिल के दौरे से उसका निधन होता है। इस उपन्यास की लेखिका ने यह दिखाया है कि, "नारी की पवित्रता की कसौटी उसकी मानसिक एकात्मता और समर्पण है, शारीरिक कुंवारापन नहीं।"

चित्रा मुद्गल के 'एक जमीन अपनी' उपन्यास मे विज्ञापन जगत मे होने वाले नारी शोषण को चित्रित किया गया है। इस पूरे उपन्यास मे स्त्री शोषण के संबंध मे संचार माध्यमो की भोगवादी दृष्टि का पर्दाफाश किया है।

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' में नायिका महरुख [illegible] परिवार की शिक्षित और संवेदनशील युवती है, जो मुस्लिम समाज की परंपराओं को अत्यधिक मान्यता देती है, किंतु जब उसका मंगेतर रफत पढ़ाई के दौरान अमेरिका जाता है तो वहीं की लड़की से विवाह रचाता है और लौटते वक्त उसे तलाक देता है। यह बात पता चलने पर महरुख उससे शादी के लिए इंकार कर देती है। और स्वयं अपना मार्ग निर्धारित कर एक छोटे से गांव में पढ़ाने लगती है। वहां के लोगों को साहस के साथ अन्याय से लड़ना सिखाती है। वह अपने जीवन को नया अर्थ देती है।

नासिरा शर्मा ने नायिका महरुख के जरिए यह बताने की कोशिश की है कि सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकारों के बावजूद आज भी स्त्री दासी है और पुरुष स्वामी।

<u>निरुपमा सेवती</u> का 'दहकन के पार' उपन्यास में धार्मिक, सांप्रदायिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है। तुषार हिंदू लड़की है और असलम मुसलमान। इनमें प्रेम तो है, पर धर्म के कारण वे शादी नहीं कर पाते। असलम से तुषार को गर्भ रह जाता है। वह गर्भपात कराना नहीं चाहती। एक सांप्रदायिक दंगे में असलम मारा जाता है। इकबाल जो तुषार और असलम दोनों का मित्र रहता है, तुषार को सांत्वना देता है। इकबाल तुषार और उसके बच्चे को अपनाता है। इस प्रकार निरुपमा सेवती ने आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के भीतर घुटती हुई नारी के जीवन संघर्ष की अनेक बिंदुओं पर उभरते हुए भविष्य के प्रति आशावादी स्वर मुखरित किया है।

<u>प्रभा खेतान</u> के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका प्रिया संपन्न मारवाड़ी परिवार की बेटी है। 10 उम्र की आयु में अपने ही भाई से उसका कौमार्य भंग होता है। दर्शनशास्त्र के अध्यापक मुखर्जी ने भी उसे भोगा है। नरेंद्र से प्रिया का विवाह होता है। संपन्न ऐश्वर्यपूर्ण ससुराल उसे मिलता है। किंतु नरेंद्र की स्वेच्छाचारिता, उसके अनैतिक संबंधों के कारण प्रिया उससे अलग हो जाती है। अपने बलबूते पर विदेशों तक अपना व्यापार बढ़ाती है, जिसे देखकर नरेंद्र प्रिया से ईर्ष्या करता है। पुरुष का अभिमान नारी स्वाभिमान को सहज ही स्वीकार नहीं कर पाता। इस तरह प्रभा खेतान ने प्रिया के माध्यम से नारी की अस्मिता, स्वत्व-सिद्धि, स्वाभिमान, गौरव का चित्रण किया है।

<u>मैत्रेयी पुष्पा</u> के उपन्यासों में नारी शक्ति जाग उठी है। अब नारी पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने के लिए अपना कदम बढ़ा चुकी है। फिर चाहे वह 'बेतवा बहती रही' की नायिका उर्वशी हो या 'इदन्नमम' की मंदाकिनी हो या 'चाक' की सारंग हो। उर्वशी के जरिए लेखिका विधवा विवाह को प्रोत्साहन देती है। तो मंदाकिनी को उन्होंने एक जुझारू युवती के रूप में दिखाया है, जो वह समाज और परिवार के बंधनों को ही नहीं तोड़ती अपितु नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों और ग्रामीणों पर होते रहे शोषण का विरोध करती है। वहीं सारंग अपने पति के विरोध में चुनाव में खड़ी होकर विरोधियों के चक्रव्यूह को तोड़कर विजय प्राप्त करती हुई दर्शाया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार लेखिकाओं ने पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी समस्या, नारी का दर्द, पीड़ा, यातनाओं को समाज के सामने उद्घाटित किया है। उनकी रचनाओं में जो स्त्रीवाद मिला है वह प्रगतिशील है। लेखिकाओं के उपन्यास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दिन-ब-दिन उनकी रचनाओं में स्त्री को अधिक मुक्त स्वतंत्र दर्शाया है। ऐसी नारी का चित्रण मिलता है जिसने अधिकारों को अधिक प्राप्त किया है। नारी जीवन के [illegible] रचना की है। दिनेश नंदिनी डालमिया, शशी प्रभा शास्त्री, शिवानी जैसी लेखकों की रचनाओं [illegible]र से पीड़ित नारी

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

का आक्रोश, संघर्ष, व्यथा, संवेदना, तनाव दिखाई पड़ता है। कहीं कहीं उनके नारी पात्र विद्रोह भी करते है पर वह अविश्वसनीय प्रतीत होते है। नारी मुक्ति का अर्थ पारिवारिक जीवन से मुक्ति नहीं, उसकी बुराइयों से मुक्ति होना चाहिए।

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास मे परंपरागत नारी के विपरीत आधुनिक नारी का स्वच्छंद लेखन किया है। राजीव सेठ ने यह प्रतिपादित किया है कि विधवा होते ही स्त्री का जीवन रुकता नहीं बल्कि उसे अपने तरीके से जीने का पूरा अधिकार है। मृदुला गर्ग ने अपने "मैं और मैं" उपन्यास में पुरुष किस प्रकार स्त्री के साथ खेलता है उसी प्रकार स्त्री उसके साथ खेल सकती है यह दिखाया है। ममता कालिया ने पुरुष की संशयी प्रवृति का परिणाम दिखाते हुए यह बताया है कि नारी की पवित्रता की कसौटी उसकी मानसिक एकात्मता और समर्पण है, शारीरिक कुंवारा पन नहीं। चित्रा मुद्गल ने विज्ञापन जगत में होने वाले नारी शोषण पर प्रकाश डाला है। नासिरा शर्मा ने स्त्रियों के लिए जारी किए गए अधिकारों पर, कानूनों पर करारा व्यंग्य किया है। निरुपमा सेवती ने उन धार्मिक, सांप्रदायिक रुढियों पर प्रहार किया है जो स्त्रियों के विरोध में है। प्रभा खेतान ने यह चित्रित किया है कि आज की नारी पति के अनैतिक संबंधों को नहीं सहती बल्कि अलग होकर वह अपनी अस्मिता खुद बना सकती है। मैत्रीय पुष्पा के उपन्यासों में पुरुष के वर्चस्व को चुनौती देने वाली नारी का चित्रण मिलता है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कोई क्षेत्र वर्जित नही है। क्रूर सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह करना स्त्री वादी साहित्य की विशेषता है। महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ऐसी स्त्री की कल्पना की है जो अखंड सौभाग्यवती रहो ऐसे प्रधानों का विरोध करती है। उन्होंने यह संदेश दिया है कि, स्त्री स्वयं को और समाज को पुरुष संदर्भ के बगैर बदले उसे स्वावलंबी होना है। चौका बर्तन करने वाली स्त्री तक क्रांति लाने की कोशिश महिला उपन्यास कारोंने की है। नारी का यही कहना है कि,

नारी ना देवी है, ना दासी है,
केवल मानवी है,
जो वह भी जीवन के अभिलाषी है।

Dr. Kanchan S. Kudchikar,
MES INSTITUTE OF MANAGEMENT,
Rajajinagar,
Bangalore-10
kanchanmesiom@gmail.com

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

Sharadas

Principal
MES Institute of Managemen
Rajajinagar Bangalore-560 0..

महिला सशक्तिकरण में
हिन्दी साहित्य का योगदान

M.E.S. Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10.

सम्पादक
डॉ. माया सगरे-लक्का

सह-सम्पादक
डॉ. श्रीनिवास मूर्ति
डॉ. नंदिनी चौबे

रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

डॉ. माया मगरे-लक्का

डॉ. माया मगरे लक्का का जन्म 30 सितंबर को महाराष्ट्र राज्य के लातूर जिले में एक धार्मिक तथा सुशिक्षित परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा श्री देशीकेन्द्र विद्यालय लातूर में तथा स्नातकोत्तर की उपाधि दयानंद कला महाविद्यालय लातूर से प्राप्त हुई। आपने स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय से बी.एड. किया और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपकी 'प्रयोजनमूलक हिंदी' अरुणा प्रकाशन, लातूर से तथा 'हिंदी और मराठी के स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' शैलजा प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई है। साथ ही 'प्रयोजनमूलक हिंदी' नामक किताब अखंड प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भाषा, लेखन कला तथा तकनीकी प्रविधि' यह संपादित किताब विकास प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई है। आपने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अनेक प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं। जिनका प्रकाशन भी हुआ है। उनमें से कुछ प्रपत्रों को सर्वश्रेष्ठ प्रपत्र के रूप में सम्मानित भी किया गया है। आपके अलग- अलग महाविद्यालयों में अतिथि व्याख्यान भी हुए है । इसके साथ ही आप अखिल भारतीय हिंदी महासभा के बेंगलुरु प्रांत के 'प्रांत अध्यक्ष' के रूप में कार्यरत हैं। संत कबीर प्रतिष्ठान लातूर तथा ज्ञान किरण संस्था बेंगलुरु इन संस्थाओं में सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। आप पिछले 18 सालों से बेंगलुरु में निवास कर रही हैं। आप रेवा विश्वविद्यालय के कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग में सह आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आपको मराठी, हिंदी, अंग्रेजी तथा कन्नड़ भाषाओं का ज्ञान है।

Also available at : Flipkart amazon

विकास प्रकाशन, कानपुर
311 सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर 208027
शाखा : 110/138 मिश्रा पैलेस, जवाहर नगर, कानपुर 12
मोबाइल : 9415154156, 9450057852
E-mail vikasprakashankanpur@gmail.com
vikasprakashanknp@gmail.com
Website www.vikasprakashan.com

ISBN 978-93-95922-18-0
9 789395 922180
₹ 800.00

S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान
सम्पादक	:	डॉ. माया सगरे- लक्का
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2023 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	800/-
ISBN	:	978-93-95922-18-0

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

25. नीला आकाश उपन्यास में स्त्री पात्र 159–163
डॉ. वानिश्री बुग्गी
26. 'शेष यात्रा' उपन्यास में चित्रित भारतीय नारी के संघर्ष की गाथा 164–167
विक्रम बालकृष्ण वारंग
27. लक्ष्मीकांत वर्मा के प्रमुख उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण 168–174
डॉ. श्रीनिवास मूर्ति के.
28. प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री विमर्श 175–180
डॉ. नंदिनी चौबे
29. उषा प्रियम्वदा के कथा साहित्य में कामकाजी स्त्री : विविध संदर्भ 181–186
डॉ. पूनम सिंह
30. हिमांशु जोशी की कहानियों में नारी-चित्रण 187–193
डॉ. के. आर. शशिकला राव
31. हिंदी कथा साहित्य में स्त्री 194–198
डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील
32. हिंदी कथा साहित्य में वर्णित नारी : घर और बाहर 199–203
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी
33. आधुनिक कहानियों में नौकरीपेशा नारी का स्वरूप 204–208
डॉ. के. प्रिया नायडू
34. महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान (मालती जोशी की कहानियों के संदर्भ में) 209–213
डॉ. अनिता वेताल/अत्रे
35. यशपाल के कथा साहित्य में 'स्त्री' 214–221
डॉ. रमेश यादव
36. नवें दशक के नाटकों में नारी समस्याएँ 222–227
डॉ. कंचन कुडचीकर
37. स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श 228–

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

36

नवें दशक के नाटकों में नारी समस्याएँ

डॉ. कंचन एस. कुडचीकर

नवें दशक के नाटककारों ने नारी समस्याओं को विभिन्न कोनों से देखा परखा और विवेचन किया है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। विषय के अनुसार तथा समय की परिस्थिति के अनुसार रचनाकार अपनी रचनाओं में विभिन्न समस्याओं को चित्रित करता है। इन नाटककारों ने विविध नारी चरित्रों की सृष्टि कर परंपरा एवं आधुनिकता के द्वंद्व, दांपत्य जीवन की विसंगतियों, कटुता एवं तनाव, स्त्री-पुरुष के आपसी संबंधों की नवीन मान्यताओं और उनसे उत्पन्न जटिलताओं, नारी की आर्थिक निर्भरता तथा समान अधिकार की भावनाओं के कारण पारिवारिक तथा सामाजिक क्षेत्र में उन्हीं समस्याओं को नाटकीय अभिव्यक्ति का विषय बनाया है।

नवें दशक के नाटककारों ने नारी की जीवन को प्रस्तुत करने वाली अनेकानेक समस्याओं को चित्रित किया है। जो निम्न प्रकार है-

दहेज समस्या

बेटी के विवाह के समय दहेज देने की प्रथा बहुत पुरानी है। सभी वर्गों के लोग अपने सामर्थ्य के अनुसार कन्यादान के साथ अन्य सामान भी देते हैं। लेकिन आज यह शोषण का रूप बन गया है। दहेज नए-नए रूप धर कर सामने आ रहा है। बदलते [illegible] के साथ यह एक व्यापक सामाजिक समस्या बन गई है और इस समस्या से [illegible] का नाश एवं शोषण हो रहा है।

समानांतर प्रेम

यह नाटक [illegible] अहमद निहाल सिद्दीकी की है। इस नाटक में [illegible]

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore

निकलती है। उसी समय उसे गुंडे पकड़ लेते है। संयोग से विजय बहादुर उधर से गुजरते है, गुंडे उन्हें देख कर भाग जाते है। विजय बहादुर काम्मो को आत्महत्या करने से बचाते है और उसके घर लेकर आते हैं लेकिन वह कम्मो का यौन शोषण करते हैं। कम्मो मन-ही-मन पछताती है और अपने भाग्य को कोसती है।

इस नाटक में लेखक ने दहेज प्रथा पर करारा व्यंग्य किया है और दहेज प्रथा के कारण अच्छी लड़कियों की जिंदगी किस प्रकार बर्बाद हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण किया है।

विधवा समस्या -

विधवा समस्या में विधवाओं के विरुद्ध हिंसा में पीटना, भावनात्मक उपेक्षा, यातना, गाली गलोज करना, लैंगिक दुर्व्यवहार, संपत्ति में वैध हिस्से न होना और उनके बच्चों के साथ दुर्व्यवहार सम्मिलित है। नवें दशक के नाटककारों ने विधवाओं की विविध समस्याओं को अपने नाटकों में चित्रित किया है।

जीने दो -

यह नाटक रामभगत पासवान का है। इस नाटक में केदार सामान्य किसान है। उनकी पत्नी का नाम मनोरमा है। पति के देहांत के बाद मनोरमा विधवा हो जाती है। परिवार वाले उसका शोषण करते हैं। उसकी बेटी अंजना को अनूपलाल और उसकी पत्नी कलंकित करते हैं।

इस नाटक में दूसरी एक विधवा है अंजना। इसका विवाह 60 वर्ष के रामधारी से होता है। शादी के बाद उसको बुलाकी जान से मार देता है तब अंजना कम उम्र में विधवा हो जाती है। अंजना नौजवान है। उसका यौन-शोषण करने का काम बुलाकी और लूटनमल करते हैं। लूटनमल अंजना का मानसिक शोषण भी करता है। इस प्रकार विधवा अंजना का शारीरिक, मानसिक शोषण परिवार वाले एवं समाज के लोग करते हैं। उसे अपनी जिंदगी कठिनाइयों में जीने पड़ती है।

मैं नारी तुम पुरुष -

यह नाटक डॉ. अज्ञात का है। इसमें प्रमुख नारी पात्रा भगवती है। वह 20 वर्ष की आयु में विधवा हो जाती है। उसे अनेक प्रकार का दर्द भुगतना पड़ता है, इसकी वजह से वह घर से भागती है भाग कर वह लोकसेवा संघ में शामिल होती है।

लोक सेवा संघ में नारियों का यौन शोषण किस प्रकार होता है, विधवाओं को अपनी जिंदगी में किस प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़ती हैं इसका यथार्थ चित्रण डॉ. अज्ञात ने इस नाटक में किया है।

वेश्यावृत्ति की समस्या -

यद्यपि देश में वेश्याओं की संख्या के बारे में निश्चित आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10

लेकिन भारतीय नगरों में वेश्यावृत्ति गंभीर सामाजिक समस्या है। ग्रामांचल में तेजी से बढ़ती दरिद्रता और शहरों के आकर्षण के कारण प्रतिदिन हजारों युवक ही नहीं औरतें भी प्रतिदिन नौकरी की तलाश में गाँव छोड़ शहरों में आती है फिर काम की तलाश में उन्हें कहाँ-कहाँ ले जाया जाता है उन पर क्या बीती है अनुमान से ही समझा जा सकता है। अंत में वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए औरतें मजबूर हो जाती हैं।

श्वेत कमल -

यह नाटक विष्णु प्रभाकर का है। इस नाटक में पूनम एक पढ़ी-लिखी लड़की है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण और नौकरी पाने के लिए भटकती रहती है। लेकिन उसको नौकरी नहीं मिलती। आज के युग में पैसों को महत्व है। इसीलिए वह अर्थ प्राप्त करने के लिए अपने समाज का, संस्कृति का, परिवार का विचार न करते हुए पैसों के लिए अपना जिस्म तक बेचती है। पूनम इस तरह अपना पूरा जीवन बर्बाद करने के लिए तुली है। एक दिन पुलिस होटल पर रेड डालती है तो उसे पछतावा आ जाता है और उसी समय वह आत्महत्या कर लेती है।

इस प्रकार आधुनिक युग में पढ़ी-लिखी लड़कियाँ पैसों के लिए और अपने शान शौकत के लिए अपना जिस्म बेचती है और समय आने पर खुद को मिटा देती है। इस प्रकार नवें दशक के नाटकों में वेश्यावृत्ति की समस्या चित्रित हुई है।

बलात्कार की समस्या -

बलात्कार की समस्या सभी देशों में गंभीर मानी जाती है। भारत में आयु के हिसाब से बलात्कार की शिकार की प्रतिशतता 16 से 30 वर्ष के आयु समूह में सर्वाधिक है। जबकि 10 वर्ष से कम आयु के शिकार लगभग 4.2% है और 16 वर्ष के बीच आयु के शिकार लगभग 22.8% है। 30 वर्ष के ऊपर के शिकार 17% है। गरीब लड़कियाँ ही अकेली बलात्कार का शिकार नहीं होती अपितु मध्यम वर्ग के कर्मचारियों के साथ मालिकों द्वारा बलात्कार किया जाता है। इस प्रकार उच्च मध्यमवर्गीय महिलाओं के साथ बलात्कार होता है। नवें दशक के नाटककारों ने भी नारी की बलात्कार की समस्या चित्रित की है।

गांधार की भिक्षुणी-

विष्णु प्रभाकर का यह नाटक है। इस नाटक में बलात्कार की समस्या को उजागर किया गया है। इसकी कथावस्तु ऐतिहासिक है। भारत पर हुए आक्रमणों को स्कंद गुप्त ने विफल कर दिया। पर काबुल, कंधार पर हूणों का अधिकार बना रहा।

हूण सरदार नारियों पर अन्याय, अत्याचार करते है। गांधार के बौद्ध विहार में रहने वाली भिक्षुणी आनंदी उनके बलात्कार का शिकार होती है। वह [illegible] इस नाजायज संतान से अपमानित होती है और आत्महत्या करना चाहती है। पर माल

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

तब यशोधर्म उसे समझाते हैं। यशोधर्म द्वारा आनंदी प्रेरित होकर प्रतिशोध की भावना से जीवन यापन करती है और एक दिन अपने बलात्कारी हूण सरदार को खत्म कर देती है। वर्तमान में भी आनंदी के समान अनेक नारियाँ बलात्कार का शिकार होती हैं। कई नारियाँ आत्महत्या करती हैं तो कई आनंदी के समान जीवन-यापन करती है।

नौकरीपेशा नारी की समस्या-

आज नारी पुरुषों के समान हर क्षेत्र में आगे हैं। हर क्षेत्र में वह नौकरी कर रही है। नौकरी पेशा या कामकाजी महिलाओं की अपनी अलग समस्याएँ हैं। घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में उससे अपेक्षा की जाती है। बाहर काम के बावजूद उसे गृह कार्य में परंपरागत ढंग से अकेले ही रहना पड़ता है। गृहिणी तो यह कार्य आसानी से कर लेती पर कामकाजी महिलाओं के जीवन में इससे जुड़ी हुई अनेक समस्याएँ सामने आती है। समयाभाव के कारण ही घर में बच्चों की दुर्दशा, घर में रहने वाली स्त्रियों द्वारा असहयोग आदि ऐसे अनेक स्थिति में उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। नवें दशक के नाटककारों ने नौकरी पेशा नारियों की समस्याएँ चित्रित की हैं।

अहिल्या आज की -

रेणू इस नाटक का प्रमुख नारी पात्र है। वह एक नौकरी पेशा नारी है। थकी-हारी होने के बाद भी उसके चेहरे पर उल्लास एवं चमक दिखाई देती है। अपने पति रवि को हमेशा खुश रखना चाहती है। रेणू एक भारतीय नारी है जो अपने पति को परमेश्वर मानती है।

वह स्वयं नौकरी करती है और पैसा पति को देती है। उसकी हमेशा सहायता करती है। लेकिन उसका पति उसे हमेशा फटकारता है, उसे बदनाम भी करता है। रेणू पढ़ी लिखी एवं नौकरी पेशा नारी है। फिर भी उसका पति शारीरिक, मानसिक, आर्थिक शोषण करता है। रेणू बहुत समय तक यह सब सहन करती है और अंत में सभी बंधन छोड़कर स्वच्छंद जीवन जीने का रास्ता तय कर लेती है।

नारी : नारी समस्या की जड़ -

भारतीय समाज में नारी को किसी पुरुष द्वारा सताना या कष्ट देना नई बात नहीं है। इसी तरह किसी नारी के द्वारा दूसरी नारी को यातना देते हुए भी हम देखते हैं। नारी यह भूल जाती है कि वह भी एक नारी है। नवें दशक के नाटककारों ने भी नारी ही नारी की समस्या की जड़ किस प्रकार है यह चित्रित किया है।

संस्कार को नमस्कार-

इस नाटक में कमोबेन महिला केंद्र की संचालिका है। वह आश्रम के संस्थापक संस्कारचंद से पूरक है। कमोबेन एक स्वार्थी एवं नारी का शोषण करने वाली संचालिका है। केंद्र के सभी हथकंडे में वह शामिल है। वह सभी राजकीय एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठित

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

लोगों से मिली हुई है और उनके सभी गलत काम करती है। अपने काम के लिए वह आश्रम की लड़कियों का उपयोग करती है। कमोबेन नारी है लेकिन नारी की पीड़ा वेदना नहीं जानती बल्कि नारी को और जलील, प्रताड़ित, बेसहारा करने का काम करती है। बेसहारा नारी का वह मानसिक, शारीरिक, शोषण खुलेआम करती है। उसका स्वयं का भी आचरण उचित नहीं है। आश्रम की संचालिका के नाते उसे महिलाओं पर उचित संस्कार करने चाहिए लेकिन वह महिलाओं को गलत कार्य करने को प्रोत्साहन देती है। आधुनिक युग के महिला आश्रमों में काम कमोबेन के समान अनेकों संचालिकाएँ हैं जो युवतियों का शारीरिक शोषण करवाती है। यह आज का यथार्थ है।

वैवाहिक जीवन की समस्या -

विवाह विश्व के सभी समाजों में पाया जाता है। लेकिन हिंदू समाज में विवाह एक धार्मिक कृत्य माना गया है। विवाह के बाद उसे पति के साथ ही रहना पड़ता है और उसके विचारानुरूप चलना पड़ता है। पुरुष हमेशा नारी पर अधिकार जताता रहा है। वैवाहिक जीवन में भी नारी को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नवें दशक के नाटककारों ने भी नारी के वैवाहिक जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है।

उजली दस्तक -

इस नाटक में सावित्री क्लर्क परिवार की एकलौती संतान है। पिता के देहांत के बाद आर्थिक स्थिति पूरी तरह बिगड़ जाती है। माँ उसकी शादी शेखर नामक युवक से करती है जो ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है क्योंकि माँ में दहेज देने की क्षमता नहीं थी। शेखर इस शादी से बहुत खुश हैं। एक दिन शेखर के सीने में दर्द होता है। रात का समय था। सावित्री डॉक्टर को बुलाने के लिए घर से निकलती है लेकिन पुलिस एवं नेताजी के चमचों के शिकंजे में फँस जाती है। वह स्वयं की इज्जत बचाने की लाख कोशिश करती है लेकिन वह असफल होती है। इस अवस्था में वह अपने घर लौटती है लेकिन घरवाले दरवाजा बंद कर उसे ठुकराते हैं। वह घर वालों के सामने याचना करती है। इतनी याचना करने के बाद भी घर वाले उसे प्रवेश नहीं देते क्योंकि वह कलंकित है। वह यह भूल जाते हैं कि वह उनके लिए ही डॉक्टर लाने इतनी रात में गई थी। अंत में वह एक मंदिर के पुजारी के पास जाती है। इतना दर्द शेखर एवं उसकी माँ द्वारा देने के बाद भी गुप्त रूप से वह शेखर की सहायता करती है। सावित्री को वैवाहिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज के साथ पति और परिवार वालों से उसे जूझना पड़ता है। अंत में शेखर के दिल में सावित्री के प्रति प्रेम निर्माण होता है और वह सावित्री को अपने घर लेकर जाता है इस प्रकार सावित्री को अपने वैवाहिक जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

Rajajinagar, Bangalore

निष्कर्ष

इस प्रकार नवें दशक के अधिकतर नाटककारों ने अपने नाटकों में नारी समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। उनका अध्ययन कर उनकी विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। भारतीय नारी रूढ़ि-परंपरा से उपेक्षित एवं शोषित रही है। उस पर परिवार और समाज ने अन्याय तथा अत्याचार किया है। नवें दशक के नाटकों की नारी पुरुष तथा समाज के अन्याय, अत्याचार से अछूती नहीं है। आज की भारतीय नारी पढ़ी-लिखी है, कायदा-कानून जानती है। आज नारी को केवल ऊपरी तौर पर आजादी दी गई है। आज भी वह अपने मन के अनुसार ज्यादातर काम नहीं कर पाती। उसे पुरुष समाज की सलाह लेनी पड़ती है। आज भी भारतीय नारी अत्याचार शोषण से तंग आकर आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है। विभिन्न नाटककारों ने अपने विचारों से नारी समाज की समस्याओं को यथा दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ -

1. हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना, डॉ. रत्नाकर पांडे
2. नाटक और यथार्थवाद, डॉ. कमलिनी मेहता
3. हिंदी नाटकों में नायिका की परिकल्पना, प्रेमलता अग्रवाल
4. स्कंद गुप्त, प्रसाद
5. समानांतर प्रेम, अहमद निहाल सिद्दीकी
6. बिजली दस्तक, सरताज नारायण माथुर
7. जीने दो, राम भगत पासवान
8. मैं नारी तुम पुरुष, डॉ. अज्ञात
9. श्वेत कमल, विष्णु प्रभाकर
10. दिल्ली ऊंचा सुनती है, कुसुम कुमार
11. ख्याल भारमल, हमीदुल्ला
12. माधवी, भीष्म साहनी
13. गांधार की भिक्षुणी, विष्णु प्रभाकर
14. आज की अहिल्या, पारसनाथ गोवर्धन
15. अब और नहीं, विष्णु प्रभाकर
16. संस्कार को नमस्कार, कुसुम कुमार
17. आदमी जो मछुआरा नहीं था, मृणाल पांडे

★

M.E.S. Institute of Management Rajajinagar, Bangalore
Sharada S
Principal
MES Institute of Managemen
Rajajinagar Bangalore-560 010

M.E.S. Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10

क्रांतिधर्मी प्रेमचंद

संपादक
डॉ. गगन कुमारी हळवार
डॉ. बेंद्रे वसवेश्वर नागोराव

प्रेमचंद की दो विशेषताएं हैं— एक क्रांतिधर्मिता और दूसरा संवेदनशीलता। अपने आप में यह दो विरोधी तत्व हैं, किन्तु इन्हीं दो तत्वों का मणिकांचन समन्वय इस किताब में करने का प्रयास हुआ है। अतः यहाँ पर यह भी देखना अधिक रोचक होगा कि एक संवेदनशील साहित्यकार किस प्रकार अपने क्रांतिधर्मिता का पालन करते हुए, अपने सरोकारों से संपृक्त है।

M.E.S. Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10.

प
परिकल्पना
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
मो. 9968084132, 7982062594
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com

ISBN 978 93 95104 26 5

परिकल्पना

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN : 978-93-95104-26-5

मूल्य : ₹ 350

* M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

शिवानंद तिवारी द्वारा परिकल्पना, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084।
से प्रकाशित और शिव प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
[illegible] प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

12. प्रेमचंद साहित्य में बाल चेतना 87
—डॉ. अनुपमा
13. प्रेमचंद के कथा साहित्य में समकालीन और वर्तमानकालिक प्रासंगिकता 93
—डॉ. कंचन कुड्चीकर
14. प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक चेतना 99
—डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ
15. प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 105
—डॉ. धन्या बी
16. प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 109
—डॉ. नारायण बागुल
17. प्रेमचंद के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना 114
—डॉ. निशा एस
18. प्रेमचंद के साहित्य में मानववाद की अभिव्यंजना 118
—डॉ. प्राची त्रिपाठी
19. 'बलिदान' कहानी : किसान त्रासदी 124
—डॉ. माया सगरे-लक्का
20. गोदान में जीवन-दर्शन 130
—डॉ. रमेशकुमार टण्डन
21. प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री विमर्श : 'निर्मला' के विशेष संदर्भ में 139
—डॉ. राखी के शाह
22. स्त्री विमर्श के आलोक में प्रेमचंद 145
—डॉ. रितु गुप्ता
23. प्रेमचंद के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना 151
—प्रो. रूपा पाटील
24. प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्त्री जीवन की समस्याएँ 154
—डॉ. रोशन लाल
25. प्रेमचंद की कहानियों में जीवन मूल्य 167
—डॉ. वर्षाराणी जवडे
26. प्रेमचंद की कहानी 'सुहाग की साड़ी' में निहित राष्ट्र प्रेम 170
—डॉ. जयंती विस्वास
27. हिंदी के कथा साहित्य में चित्रित गाँव में स्त्री चेतना 175
पटेल निर्मलाबेन ईश्वरभाई

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

13. प्रेमचंद के कथा साहित्य में समकालीन और वर्तमानकालिक प्रासंगिकता

डॉ. कंचन कुडचीकर
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,
एमईएस आयओएम
राजाजी नगर, बेंगलूरु

प्रेमचंद अपने युग के अप्रतिम कलाकार थे जो कालजयी है। उनके कुल ग्यारह उपन्यास और 300 से अधिक कहानियां है जिनकी प्रसिद्धि के कारण उन्हें 'उपन्यास सम्राट' और 'कहानी सम्राट' भी कहते हैं। प्रेमचंद का कथा साहित्य कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। अपनी कहानियों में उन्होंने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को महत्व दिया है। प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 ई. में बनारस के पास लमही नामक गांव में हुआ था। 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। दोनों का जन्म लगभग समकालिक है। प्रेमचंद की कहानी रचना का काल दो महायुद्ध के बीच है। विश्व संस्कृति में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों से भारतीय समाज अछूता नहीं रह सकता था। प्रेमचंद के लगभग एक दर्जन उपन्यास तथा 300 से अधिक कहानियां विश्व संस्कृति की विविध धड़कनों एवं आंदोलनों में भारतीय आस्था और जीवन ज्योति को प्रज्वलित करती हैं।

समकालीन प्रासंगिकता : प्रेमचंद के कथा साहित्य में समकालीन भारतीयों की आशा-आकांक्षा, रुचि-अरुचि एवं दुख-दर्द अधिक प्रमाण में मिलता है। उनका साहित्य इतिहास में घटित घटनाओं का विस्तृत ब्यौरा नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति की संवेदनात्मक प्रतिक्रिया, प्रभाव तथा अनुगूंज है। प्रेमचंद ने ही लिखा है, "इतिहास में सब कुछ यथार्थ होते हुए भी वह असत्य है। इस कथन का आशय इसके सिवा और क्या हो सकता है कि इतिहास आदि से अंत तक हत्या, संग्राम और धोखे का ही प्रदर्शन है, जो असुंदर है, इसलिए असत्य है.... जहाँ आनंद है,

M.E.S. Institute of Management, R. Nagar, Bangalore - 10.

वही सत्य है। साहित्य काल्पनिक वस्तु है; पर उसका प्रधान गुण है आनंद प्रदान करना, और इसलिए वह सत्य है।''[1] प्रेमचंद का कहानी साहित्य समकालीन संदर्भ को ग्रहण करते हुए अद्भुत सृजनशीलता के कारण आज भी प्रासंगिक है। उनके साहित्य का प्रमुख तत्व है मनुष्य की जिजीविषा या अपनी सत्ता के लिए समस्याओं से जूझने का अदम्य उत्साह।

प्रेमचंद ने तीव्र राजनीतिक-आंदोलनों, क्रांतिकारी सामाजिक-धार्मिक परिवर्तनों तथा मूल्य संक्रमण के युग में समकालीन यथार्थों को अपने लेखन सृजन का विषय बनाया। प्रेमचंद के उपन्यासों तथा कहानियों में आंदोलन की जनवादी प्रतिक्रिया प्रतिफलित दिखाई देती है। उनकी प्रौढ़ता के समानांतर स्वतंत्रता आंदोलन भी प्रौढ़ होता जा रहा था। इनकी कहानियों में गांधी की नैतिक मान्यताओं का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। गांधी की नैतिक मान्यताओं के प्रति विशेष आस्था के आधार पर ही प्रेमचंद का हृदय परिवर्तन वाला सिद्धांत निर्मित हुआ था। मानसरोवर प्रथम भाग में संग्रहित कई कहानियों का मूल कथ्य इसी सिद्धांत से अनुशासित है। अलग्योझा, दिल की रानी, पास वाली, शिकार, सुभागी आदि कहानियां इसी प्रकार की है। लेकिन प्रेमचंद की वैचारिकता गांधी के प्रभावों के कारण आदर्श के चौखट से जड़ीभूत नहीं रह सकी। उनमें परिवर्तन का क्रम जारी रहा अंततः वे यथार्थ की कठोर सच्चाईयों को अच्छी तरह उद्घाटित करने में समर्थ हो सके।

अ) राजनीतिक प्रासंगिकता : प्रेमचंद ने अपने कुछ कहानियों का कथानक राजनीतिक संवेदना के आधार पर गढा है। देश की आजादी के लिए बड़े उत्साह से प्राणों की बाजी लगाने वाले वीरों के साथ ही स्वार्थी और दिखावटी लोगों की कमी न थी। इतना जरूर था कि यह शक्तियां किसी न किसी रूप में कमजोर थी अन्यथा, त्याग की शक्ति प्रभावशाली ना हो पाती। 'मां' कहानी के आदित्य का कथन तत्कालीन स्थितियों को बेबाक ढंग से उजागर करता है, ''यह बड़ा ही कटु अनुभव है करुणा! मुझे ना मालूम था कि मेरे कैद होते ही लोग मेरी ओर से यों आंखें फेर लेंगे, कोई बात भी नहीं पूछेगा। राष्ट्र के नाम पर मिटने वालों का यही पुरस्कार है, यह मुझे न मालूम था। जनता अपने सेवकों को बहुत जल्दी भूल जाती है, यह तो मैं जानता था, लेकिन अपने सहयोगी और सहायक इतने बेवफा होते हैं, इसका मुझे यह पहला ही अनुभव हुआ।''[2] 'अनुभव' में भी देश प्रेम और स्वार्थ का यही द्वंद्व है। आंदोलनकारियों के कारावास हो जाने पर अपने ही [illegible] उनके परिवार के लोगों को आश्रय देने से कतराने लगते थे। सरकारी [illegible] में लगे लोगों में यह स्वार्थपरता कुछ अधिक थी। इसके विपरीत [illegible]

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

कमी न थी जो नौकरी पर लात मार सकते थे। 'तावान' एक गरीब व्यापारी के एक दम से उजड़ जाने की कथा है। गरीबों में जोश तथा त्याग की कमी नहीं थी परंतु उनकी निर्धनता उनकी उमंग की गति को अवरुद्ध कर देती थी। उन पर कोई विश्वास करने वाला नहीं था। छकौड़ी की झुंझलाहट में यही चीज दिखाई देती है। कांग्रेस के नेतृत्व में चलने वाले राष्ट्रीय आंदोलन के बाहर आतंकवादी आंदोलन भी चल रहे थे। अंग्रेजी शासन के प्रति सामान्य जनता में घृणा का भाव जगाने में आंदोलन की अहम् भूमिका थी। प्रेमचंद ने आंदोलन के इस समग्र रूप को मान्यता दी थी। प्रखर शब्दों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लिखी गई कहानियों का संग्रह 'सोजेवतन' को जप्त कर लिया गया था। यहीं से धनपत राय का साहित्यिक नाम नवाब राय से बदलकर प्रेमचंद हो गया। पांच साल की अर्जित ख्याति समाप्त हो गई। वह नए सिरे से साहित्य साधना में जुट गए।

आ) आर्थिक और सामाजिक प्रासंगिकता : अंग्रेजी शासन की स्थापना के फलस्वरूप उत्पन्न सांस्कृतिक टकराहट से भारतीय समाज में बदलाव की नई प्रक्रिया का आरंभ हुआ। क्योंकि अंग्रेजों की मूलवृत्ती व्यवसायिक थी। उन्होंने भारत को कच्चे माल के स्त्रोत और तैयार माल के बाजार के रूप में मान्यता दी। इस व्यावसायिकता की मनोवृति का असर गांव पर भी पड़ा। अंग्रेजों की स्वार्थ परख भावना से जमींदारी प्रथा और महाजनी 'सभ्यता' की समृद्धि हुई। नई अर्थव्यवस्था में शासक और शासित के बीच जमीदारों, महाजनों तथा सरकारी दलालों के आ जाने से शोषण की प्रक्रिया और तेज हो गई। इनके अत्याचार अंग्रेजों से कम नहीं थे। अर्थ-केंद्रित जीवन दृष्टि के कारण पारस्परिक द्वेष और कलह बढ़ते जा रहे थे। अकाल और महामारी के प्रकोप से गरीबों की हालत और भी दयनीय हो जाती थी। आर्थिक गतिशीलता के प्रभाव से सामाजिक गतिशीलता भी उत्पन्न हुई। फलतः उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग का उदय हुआ। निम्न वर्ग में जो सामाजिक चेतना थी वह बड़ी यथार्थवादी थी। प्रेमचंद ने समाज के इस वर्ग का बड़ा ही अच्छा एवं मार्मिक चित्र अपने कहानियों में किया है। यह वर्ग कुछ विशिष्ट स्थितियों में किंकर्तव्यविमूढ़ तथा चिंतन की दृष्टि से जड़ीभूत होता दिखाई देता है। 'कफन' का घीसू और माधव कफन के पैसे से भरपेट भोजन करके तृप्त हो जाते हैं। 'पूस की रात' में ठिठुरते हल्कू की पीड़ा और भी मर्मवेधी हो जाती है, जब वह जानवरों से अपने खेत को नहीं बचा पाता, बेचारे को मालगुजारी चुकाने की चिंता अब भी सताये है। छोटे किसानों की यही समस्या थी। वे ऋण के भार से दबे हुए थे। मुन्नी का यह कथन उनकी इस दशा को स्पष्ट करता है, "ना जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती।

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar Bangalore - 10. *

भर भर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजदूरी करो। ऐसी खेती से नाता [illegible]

मध्यवर्गीय मनोवृत्ति इससे भिन्न थी। वह अंदर से अत्यंत निर्बल होते हुए भी बाहर से सबल होने का नाटक करता था। 'बेटों वाली विधवा' कहानी का [illegible] निम्न मध्यवर्गीय है। इसकी क्रूरता के मूल में अर्थ अभाव उतना नहीं है जितना स्वार्थ और चालाकी। इस वर्ग में कथनी और करनी में बड़ा अंतर था। '[illegible]' कहानी में एक क्लर्क के पुत्र का सैद्धांतिक खोखलापन स्पष्ट है। जाति और [illegible] के आधार पर निर्मित उच्च वर्गों की शोषण की मानसिकता में परिवर्तन की अनिवार्यता उत्पन्न हो रही थी। नई शिक्षा प्रणाली से पुराने मूल्यों को नए संदर्भ में व्याख्यायित तथा प्रतिष्ठित करने की पहल शुरू हो गई थी।

यह ऐसा युग था जहाँ अपनी खोई हुई शक्ति को प्राप्त करने के लिए [illegible] में प्रचलित प्रथाओं तथा कुरीतियों को बड़ी बेरहमी से तोड़ना जरूरी था। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, थियोसॉफिकल सोसायटी आदि संस्थाओं और उनसे संबंध व्यक्तियों ने सती प्रथा, छुआछूत, तथा बाह्याडंबरों को मिटाने का प्रयास किया। जाति-पाति की निरर्थकता सिद्ध करते हुए सामाजिक समता, स्त्री शिक्षा तथा अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया गया। प्रेमचंद ने छुआछूत, विधवा और अंतर्जातीय विवाह की समस्याओं को अनेक कहानियों में उठाया है। प्राचीन और नवीन मान्यताओं के द्वंद्व से इनके सूक्ष्म एवं मार्मिक प्रभाव अंकित करने में उन्हें पूरी सफलता मिली है। बेटों वाली विधवा, स्वामिनी, सुभागी, धिक्कार, शिकार, शांति आदि अनेक कहानियों में वैधव्य व्यथा, स्त्री-शोषण तथा संघर्ष को लेखनीबद्ध किया गया है। 'बेटों वाली विधवा' में नारी की स्वाभाविक व्यथा है तो 'धिक्कार' में विधवा विवाह का कारुणिक अंत। '[illegible]' में विलासी पति के विरुद्ध आत्म-त्याग की कहानी है। 'स्वामिनी' में विधवा की दबी भावनाओं को उजागर किया गया है। 'सुभागी' और 'शिकार' में नारी [illegible] जागृत हुई है। अंतर्जातीय विवाह की जितनी मौखिक धूम थी [illegible] व्यावहारिक परिणतियां नहीं हो पाईं। नवयुवकों में पारिवारिक एवं सामाजिक [illegible] के त्याग की भी कमी थी। 'कायर' कहानी में अंतर्जातीय [illegible] भावना की निष्फलता अंकित की गई है। प्रेमचंद इसके माध्यम से [illegible] चाहते हैं कि निर्बल मानसिकता नूतन परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त करने में [illegible] हो जाती है यहां तक कि उसकी परिणति [illegible] में होती है।

2. वर्तमान कालिक प्रासंगिकता : पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव [illegible]

M.E.S. Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10.

है नहीं कहा जा सकता। ज्ञान-विज्ञान की अलौकिक और सार्वजनीन चेतना से भारतीयों की परंपराप्रियता तथा अंधश्रद्धा की नई सोच को दिशा तो मिली जरूर किंतु उनकी सभ्यता और संस्कृति पर भयानक कुठाराघात भी हुआ। 'मां' शीर्षक कहानी में नए पुराने मूल्यों का द्वंद स्पष्ट है। संयुक्त परिवार के विघटन के पीछे भी अर्थ-केंद्रित मानसिकता सक्रिय थी। 'अलग्योझा' में जो पारिवारिक बिखराव दिखाकर उसे भारतीय विचारों के द्वारा पुनः जोड़ने का प्रयास है वह कला की दृष्टि से क्षीण प्रभाव भले ही डालता है किंतु प्रेमचंद की अपनी सोच को मुखरित अवश्य करता है। पारिवारिक मर्यादा तथा विनय के ह्रास, पितृ-ऋण एवं मातृ सेवा के पुराने मूल्यों के बिखराव का कारण भौतिक स्वतंत्रता थी, प्रेमचंद ने इस भयावह संकट का साक्षात्कार किया है। उसकी गंभीरता आज भी कम नहीं हुई है। विधवा की बात छोड़िए सधवा मां अपने बच्चों की सेवा से वंचित होती जा रही है। पाश्चात्य किस्म की जीवन पद्धति के अनुकरण पर विकसित पारिवारिक व्यवस्था में वृद्ध माता-पिता के लिए कोई सम्मानीय स्थान नहीं है। उस समय स्त्री को समानता का नारा अवश्य दिया गया किंतु आज भी पुरुष वर्ग उसे अधिकार देने के लिए पूर्णता तैयार नहीं है। पति पत्नी के बीच अंतर्द्वंद्व निरंतर गहराता जा रहा है। वैयक्तिक चेतना के सशक्त होने तथा वैवाहिक मूल्यों की पवित्रता नष्ट होने के कारण पति-पत्नी का संबंध समझौतावादी अधिक हो रहा है। पारिवारिक सुख-शांति भी क्षीण होती जा रही है। प्रेमचंद युगीन परिवेश में इन समस्याओं को भली-भांति उठाया जा चुका है। दहेज के अभाव में होने वाले अनमेल विवाह की दुर्गतियों से प्रेमचंद भलीभांति परिचित थे। अपने साहित्य में इस समस्या का उन्होंने संवेदनात्मक चित्र अंकित किया है। प्रेमचंद ने भारतीय जीवन का कोना कोना झांक लिया था। उनकी पैनी दृष्टि से कोई भी यथार्थ छूटने नहीं पाता।

उद्देश्य : प्रेमचंद ने अपने लेखन के माध्यम से पुनर्जागरण आंदोलन में विशेष सहयोग प्रदान किया। राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक स्थितियों और संबंधों के बदलाव के कारण भारतीय जीवन में एक नया अस्मिता बोध स्फुरित हुआ। वर्तमान काल में हमारी दृष्टि में जो परिवर्तन हुआ है उसके पीछे कितना मानसिक संघर्ष एवं जन बलियाँ हुई है उनका संवेदनात्मक इतिहास प्रेमचंद की कहानियों में अंतर्निहित है। इन्हें पढ़कर आज भी रोमांच हो जाता है।

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10

संदर्भ

1. मानस सरोवर, भाग 1 और 5, प्रेमचंद
2. प्रेमचंद, डॉ. रामबक्ष

३. अलग्योझा-प्रेमचंदस
4. मां-प्रेमचंद
5. बेटों वाली विधवा-प्रेमचंद
6. ईदगाह-प्रेमचंद
7. शांति-प्रेमचंद
८. नशा-प्रेमचंद
9. स्वामिनी-प्रेमचंद
10. ठाकुर का कुआं-प्रेमचंद
11. पूस की रात-प्रेमचंद
12. दिल की रानी-प्रेमचंद
13. धिक्कार-प्रेमचंद
14. कायर-प्रेमचंद
15. शिकार-प्रेमचंद
16. सुभागी-प्रेमचंद
17. तावान-प्रेमचंद
18. बड़े घर की बेटी-प्रेमचंद
19. कफन-प्रेमचंद
20. पास वाली-प्रेमचंद
21. प्रेमचंद की कहानियां, संवेदना और शिल्प, डॉ. रामकिशोर वर्मा

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

Sharadas
Principal
MES Institute of Managemen
Rajajinagar Bangalore-560 010

Azadi Ka Amrit Mahotsav

STATISTICAL INDIAN INSTITUTE
UNITY IN DIVERSITY

DRTC
1962 - 2022

Proceedings of the International Conference on Emerging Digital Library Platforms Shaping Digital Transformation and National Data Exchange

Editors-in- Chief

Krishnamurthy M   Ramesha B   Subhash Reddy B

Co-Editors

Hemavathi B N   Sneha Bharti   Mahesh V M

Documentation and Research Training Centre
Indian Statistical Institute

2022

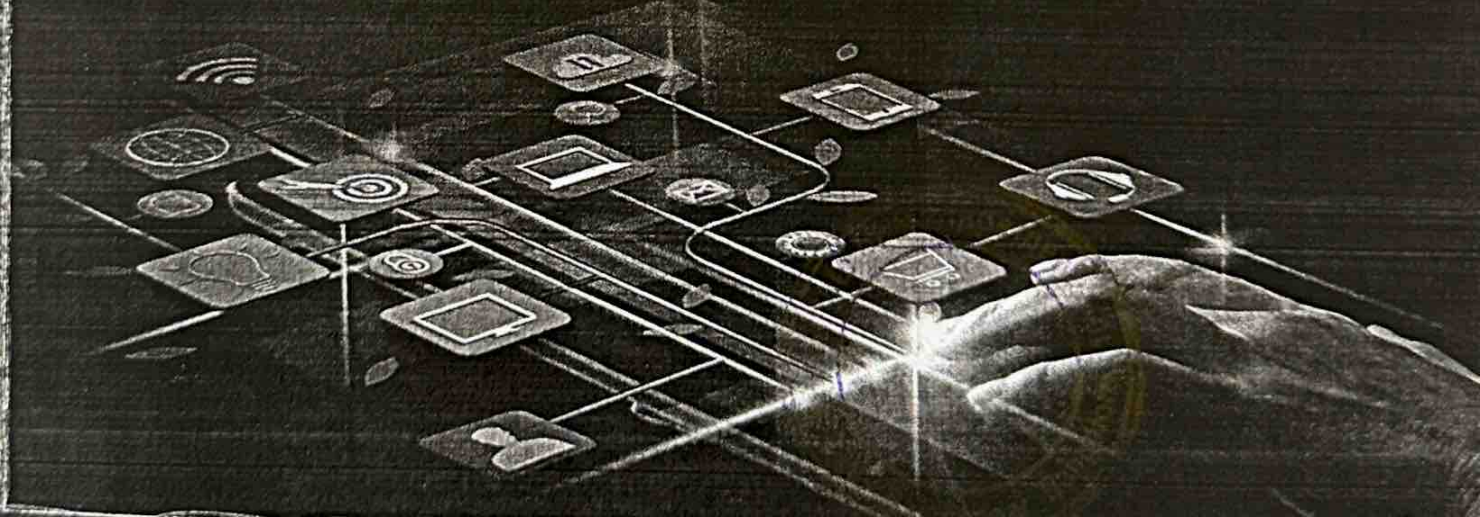

Proceedings of the International Conference on

Emerging Digital Platforms: Shaping Digital Transforms and National Data Exchange

Organised by

Documentation Research and Training Centre

In Association with

Sarada Ranganathan Endowment for Library Sciences.

The Digital Information Research Foundation

and

Informatics India, Ltd., Bangalore

9-12, August 2022

Editors-in-Chief

M Krishnamurthy **Ramesha B** **Subhash Reddy**

Co-Editors

Hemavathi B N **Sneha Bharti** **Mahesh V M**

M.E.S. Institute of Management * 10, Rajajinagar, Bangalore *

Documentation Research and Training Centre

Indian Statistical Institute, Bangalore – 560059

Proceedings of the International Conference on

Emerging Digital Platforms: Shaping Digital Transforms and National Data Exchange

Published by :

Documentation Research and Training Centre, Indian Statistical Institute, Bangalore

ISBN: 978-93-5680-830-0

Copy right: 2022 All rights are reserved.

No part of the this conference proceeding can be reproduced, stored or transmitted in any form or by any means without the prior permission of the publisher or copy write owner. All data, views, opinions and information published in this proceeding is sole responsibility of the authors. Neither the publisher nor the members of the editorial board are in any way responsible for them.

Pages : xvi + 694

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10 *

Printed at: Driti Enterprises, Bangalore 560 085 Ph: 080 41711774

	Bengaluru Region During the Pandemic Period (Covid – 19): A Study *Sharmila N., L. Mohammad Abbas., U. Perachi Selvi and R Balasubramani*	
39.	Exploring Open Access E-Resources through Subject Gateways: A Special Reference to ELT Gateway *Manjula T*	350-358
40.	Latest Advanced Innovative Technologies and Services in Libraries: A Study *Shyla. S and Yacob Johnson*	359-368
41.	Open Access Journals for Agricultural Information *Yekanath Ningappa, and S Raghavendra*	369-374
42.	Artificial Intelligence and Machine Learning in Academic Libraries: An Overview *S. Enitha, and R. Sarangapani*	375-382
43.	Open Access Learning Resource basket for effective researchers *Ravi T M. Vasanthakumar*	383-392
44.	Open Education Platforms and accessibility of Learners resources: A study *Veena Niak and Latha, T K*	393-403
45.	Open Educational Resources Through Swayam in India: Analysis *Prasanna Kumar B.M and Sachin Y*	404-410
46.	Open Educational Resources: A Boon for Indian Higher Education *Savitha K S., C Krishnamurthy and S C Hosamani*	411-417
47.	Perception and usage of Open Electronic Resources (OERs) by the postgraduates of Yogi Vemana University, Kadapa: a study *B. Prasada Rao and M. Panduranga Swamy*	418-429
48.	SWAYAM: A Revolution Towards Digital Education System in India *Veda L Shetty*	430-438
59.	The Semantic Perspective in Digital Libraries: Graph-independent Approach in Ontology Evaluation *Maziar Amirhosseini*	439-445
50.	Awareness and Utilization of SWAYAM E-Learning MOOCs among P.G. Students and Research Scholars of Bangalore University: A Study *Narayanaswamy and B.V, Shivraj Q*	446-453

Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10

SWAYAM: A Revolution towards Digital Education System in India

Veda L Shetty
Librarian
MES Institute of management, Bangalore
vedashetty@gmail.com

Abstract: *India is one of the fastest developing nations in the world with its young minds possessing immense talent and potential to lead the country to prosperity. These qualities of the young generation can be tapped and nurtured only through providing an equal and quality education. The geographic and cultural diversity spread across the urban and rural areas of the country's population, has its own share of challenges in education. The Government of India has taken many initiatives for providing quality education especially to the people residing in rural areas who are economically weaker. The New Education Policy (NEP) announced on 29th July 2020 by the ministry of MHRD, is a massive step in this direction, in its effort to digitalize the education system. Many transformational policies are proposed in NEP for School and higher education, paving ways for global standards. This study elucidates the role of Swayam - MOOCs in distance and digital educational system in India, its technological advantages, access of SWAYAM portal and the challenges of online education.*

Keywords: *Digital India, National Coordinators,, SWAYAM, MOOCs, SWAYAMPRABHA.*

1. Introduction

Swayam stands for *Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds*. It is an initiative launched by the Ministry of Human Resource and Development (MHRD), Government of India to fulfill the essence of *'Digital India'*. The SWAYAM was launched on 9th July 2017 and provides a powerful platform for online education. There are over 2,100 courses offered by SWAYAM and covers courses from school education to post graduation courses offered by universities, including the courses related to skills and technology. SWAYAM was developed jointly by MHRD (Ministry of Human Resource and Development) and AICTE (All India Council for Technical Education) with the help of Microsoft. As per the data available till the beginning of Jan 2022, the SWAYAM has about 203 partnering institutes and has completed about 2150 courses. The total enrollments were approximately 12,542,000 and about 9,15,500 examinations were conducted with about 6,54,660 certifications provided.

2. The Important Tasks of Swayam

Even though the Digital India project is moving towards many dimensions, especially the digital revolution in academia. The main features of this project:

- One-stop web and mobile-based interactive e-content for all courses from High School to University level.
- High-quality learning experience using multimedia on anytime, anywhere basis.
- State of the art system that allows easy access, monitoring and certification.
- Peer group interaction and discussion forum to clarify doubts A Hybrid model of delivery that adds to the quality of classroom teaching.

Sharada S
Principal
MES Institute of Mana
Rajajinagar Bangalore-560 01
M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10 *

SESHADRIPURAM EDUCATIONAL TRUST

SESHADRIPURAM INSTITUTE OF COMMERCE AND MANAGEMENT

#40, Girls School Street, Seshadripuram, Bengaluru - 560020. Ph : 080-22955382 | Web : www.sicm.edu.in

Affiliated to Bengaluru City University | NAAC Accredited 'B' Grade.

'ERUDITE'

Two days Virtual Multi-disciplinary National Conference

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to Certify that paper titled

संस्कृतानुवाद-दृष्टिकोणेषु भाषायाः विविधता

Authored by

Dr. Naveen. Bhat

of

M. E. S. Institute of Management.

has been Published in ISBN 978-81-951719-1-0

Prof. K. P. Narasimha Murthy
Governing Council Chairman

Prof. Vidya Shivanna
Principal

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore-10 *

'ERUDITE'

Two Days Virtual Multi-Disciplinary National Conference 2022-23

CONFERENCE PROCEEDINGS

Chief Editor
Prof. Vidya Shivannavar

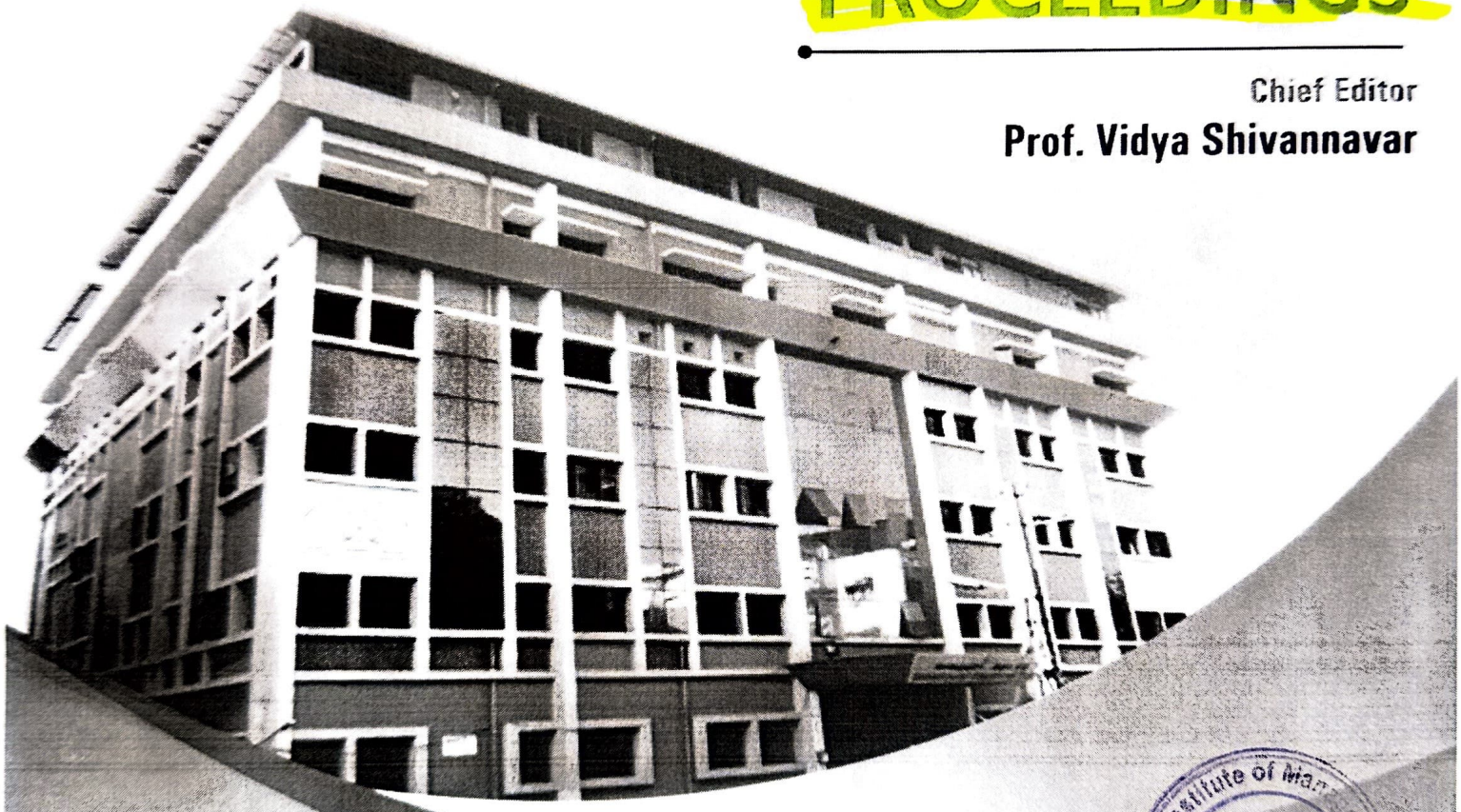

SESHADRIPURAM EDUCATIONAL TRUST

SESHADRIPURAM INSTITUTE OF COMMERCE AND MANAGEMENT

Affiliated to Bengaluru City University | NAAC Accredited 'B' Grade.

#40, Girls' School Street, Seshadripuram, Bengaluru - 560020. Ph : 080-22955382 | Web : www.sicm.edu.in

Chief Editor

Prof. Vidya Shivamanavar

Editors

Assoc. Prof. Pamitha G. | Assoc. Prof. Bhuvaneshwari R.S. | Dr. Poornima S.
Assoc. Prof. Dilip Kumar Yadav | Asst. Prof. Kavitha B. | Assoc. Prof. Asha P.T.
[illegible] R. Chikkarangaswamy | Asst. Prof. Asha S. | Asst. Prof. Akhila Devi S.

Technical and IT Support

Asst. Prof. Akarsh Kumar Singh B. P., Dept. of Commerce and Management

First Print : 2023

[illegible] reserved. The copyright of this publication is vested solely with the author. No [illegible] publication maybe reproduced, or transmitted, in any form or by any means without [illegible] written permission of the author and the publisher. Any person who does any [illegible] act in relation to this publication shall be liable to criminal prosecution and [illegible] for damages.

[illegible] expressed in this book are those of the author and not necessarily of the editor. [illegible] The editor/publisher is not responsible for the views of the author of the [illegible] way what so ever.

ISBN 978-81-951719-1-0

[illegible]THRA PRINTERS

M.E.S. Institute of Management
Rajajinagar, Bangalore - 10.

Department of Sanskrit

अनुवादसाहित्ये संस्कृतनाटकम् – अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।	Surekha Kamath	232
संस्कृतानुवाद –दृष्टिकोणेषु भाषायाः विविधता	Dr. Naveen Bhat	236
अनुवादसाहित्ये **काव्यानि-कथासरित्सागरः**	Dr. Tirumal Dr. Shivananda L. B.	242
"The Panoramic View of Translation Phases of India, with Special Reference to Translated Dramas and Other Works of Dr. Chandramouli S. Naikar"	Mr. Pradeep Kambale Dr. Padmavati M. Singari	247
Translatory Embedded Literature from Varied Perspectives : Some Glimpses	Dr. Padmaja D. S. Kum. Vaishnavi	252
[illegible] ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ನ್ಯಾಯ ಮತ್ತು ವೈಶೇಷಿಕ [illegible] ಅವಲೋಕನ	ಮಾಲಿನಿ ಆರ.	259

M.E.S. Institute of Management
* Rajajinagar, Bangalore - 10. *

संस्कृतानुवाद –दृष्टिकोणेषु भाषायाः विविधता

Dr. NAVEEN BHAT
Assistant Professor in Sanskrit
MES Institute of Management
RajajiNagar Bangalore-10

Abstract -

यदि एकस्यां भाषायां विद्यमानं ज्ञानं अन्यभाषायां भाषान्तरं न भवति तर्हि, तानि ज्ञानानि तेषां भाषाणां वक्तॄन् विहाय अन्यैः न प्राप्यते । तत् ज्ञानं साहित्यं, विज्ञानं, अन्यः विषयः वा भवितुमर्हति । अनुवादेन ज्ञानप्रसारस्य व्याप्तिः विस्तारिता भवति । संस्कृतं अल्पभाषिभ्यः, अधिकाधिकज्ञानेन च युक्ता भाषा अस्ति । अतः संस्कृतात् अन्यभाषाभ्यः अनुवादकरणेन अन्यभाषायाः जनाः संस्कृतस्य ज्ञानं प्राप्तुं शक्नुवन्ति। अन्यभाषाभिः सह सुसम्बन्धः भवेत्, अन्यभाषायाः सद्विषयाणां संस्कृतभाषायाम् अनुवादः अपि आवश्यकः । तेन भाषा स्थगितजलं नास्ति इति भावः स्थापितः भविष्यति । तदतिरिक्तं अन्यभाषिणः अपि संस्कृतं शिक्षितुं इच्छुकाः भवन्ति । एवं यदि संस्कृतस्य संवर्धनं संरक्षणं च कर्तव्यं तर्हि संस्कृतस्य अध्ययनाध्यापनाभ्यां सह संस्कृतानुवादस्य अध्ययनं शिक्षणं च अद्यतनस्य आवश्यकता अस्ति ।संस्कृतभाषायाः संरचनायाः अन्यभारतीयभाषासंरचनया सह बहु साम्यं वर्तते । अतः संस्कृततः भारतीयभाषासु, भारतीयभाषाभ्यः संस्कृते च अनुवादः सुकरः । परन्तु आङ्ग्लभाषा इत्यादीनां पाश्चात्यभाषाणां संरचना भिन्नत्वात् तैः सह संस्कृतस्य अनुवादं कर्तुं अधिकः परिश्रमः अनुभवः च आवश्यकः । भारतीयभाषासु अपि संस्कृतशब्दाः बहुसंख्याकाः सन्ति । परन्तु तासु भाषासु संस्कृतभाषायाः शब्दानां किञ्चित् अर्थपरिवर्तनं अपि भविष्यति । अतः तेषु विषयेषु अनुवादं कर्तुं विशेषज्ञानं अत्यावश्यकं भवति। अस्मिन् लेखे तान् विषयाणां चर्चा कुर्मः।

Keywords –

अनुवादः भाषा, बोली, जनगणना, चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक, साङ्ख्य, योग.

Introduction –

विश्वे ७११७ भाषाः भाष्यन्ते ।२००१ तमे वर्षे भारतस्य जनगणनानुसारं भारते १२२ प्रमुखाः भाषाः १५९९ अन्याः भाषाः च सन्ति । परन्तु अन्यस्रोतानां आकृतयः भिन्नाः सन्ति, मुख्यतया "भाषा" "बोली" इति पदयोः परिभाषाभेदस्य कारणतः । २००१ तमे वर्षे जनगणनायां ३० भाषाः अभिलेखिताः येषु लक्षाधिकाः देशीभाषिणः वदन्ति स्म, १२२ भाषाः च १०,००० तः अधिकाः जनाः वदन्ति स्म । भारतस्य इतिहासे सम्पर्कभाषाद्वयं महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहतिः फारसी आङ्ग्लभाषा च । एताः भाषाः न केवलं सम्भाषणार्थम् अपितु एताः भाषाः वदतां जनानां ज्ञानमपि एतेषु भाषासु एव लिखितम् अस्ति । तत् ज्ञानं साहित्यं, विज्ञानं, प्रौद्योगिकी, दर्शनं वा विचाराः वा भवितुम् अर्हन्ति। किन्तु एतत् ज्ञानं केवलं तस्याः विशिष्टभाषाभाषिणां कृते एव न उपलभ्यं भवेत्। यदि तत् अन्यभाषाभाषिभ्यः उपलभ्यं भवेदित्याशा वर्तते तर्हि अस्माभिः तस्य ज्ञानस्य अनुवादः कार्यः एव।

२२ भाषाः भारतस्य राजभाषा इति मन्यन्ते, संस्कृतम् अपि तेषु अन्यतमम् अस्ति । २०११ जनगणनानुसारं भारते २४,८२१ जनानां मातृभाषा संस्कृतम् अस्ति । एतत् भारतस्य जनसंख्यायाः .००२ प्रतिशतम् अस्ति । परन्तु अस्याः

Sharadas
Principal
MES Institute of Management
Rajajinagar Bangalore-560 010
M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10.

K.L.E. SOCIETY'S
S . NIJALINGAPPA COLLEGE

2nd Block, Rajajinagar, Bengaluru 560010

Re-Accredited with A+ by NAAC with 3.53 CGPA in 3rd Cycle

IQAC Initiated Two Day National Seminar on

"Growing Infrastructure – A Key to Transforming Indian Economy"

Organized by

Department of Commerce & Research Centre

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. ROHINI . PATIL

of M.E.S Institute of Management, Rajajinagar has participated/presented a paper entitled Higher Education And Employability In India. at the National Seminar "Growing Infrastructure – A Key to Transforming Indian Economy" on 30th & 31st March 2023.

Dr. Murali S.	Sri. Shivakumar M Sajjan.	Dr. C. V. Koppad.	Dr. A. B. Sonappanavar
Organizing Secretary	Convenor	Head, Department of Commerce	Principal

M.E.S. Institute of Management, Rajajinagar, Bangalore-10

INDEX

Sl. No	Title of the Paper and Author Name	Page. No.
1	Contemporary review of 'Make in India' and its contribution to the infrastructural development of India, including cashless economy. **Author:** *Anwita Mukherjee, Koushik Chatterjee. St. Xavier's College (Autonomous), Kolkata*	1-12
2	A Comprehensive Study on Investors Perception Towards Investment in Mutual Fund Portfolio. **Author:** *AligiHemaSai. Mount Carmel College, Bengaluru*	13-23
3	Kautilya's Contribution to Welfare and Resource Management During Mahabharat **Author:** *Prof. Rayanagouda. S. Marigoudar M Com, M Phil, PGDBA,PGDCA Government First Grade Women's College, Bailhongal*	24-27
4	Corporate Governance and Financial Performance: A Review **Author:** *Anshika Jain.Mount Carmel College, Bengaluru*	28-38
5	A Study On "Online Transaction and Its Perspective Towards Small Business Entities." **Author:** *Mr. Guru Prasad, Dr. G. Vinayagamoorthi. Alagappa University, Karaikudi, Tamil Nadu*	39-46
6	Impact of Digitization of Banking Services by Commercial Banks with reference to Bangalore. **Author:** *Dr.Murali.S KLE's S.Nijalingappa College, Bengaluru Dr.Anil Kumar V R. Govt. PU College, Kamasamudra Bangarpet Taluk Kolar*	47-58
7	A Study On E-Services to Customers with Special Reference to Payment Bank And Small Bank. **Author:** *Mohan Kumar B M,Dr. Bhavani V LChirashree Institute of Research and Development, Bengaluru-560010, University of Mysore*	59-68
8	Technological Evolution of Postal Services in India **Author:** *Mrs. Karanam Kavitha, Ms. Suma D and Ms. Mamatha A MSRCASC*	69-79
9	Higher Education and Employability in India. **Author:** *Smt Rohini Patil. MES Institute of Management*	80-84
10	Mobile Banking in India: A Brief Study **Author:** *Dr.Ambanna, Malkappa. Government First Grade College Sedam. Tq. Sedam Dist. Kalaburagi-585222*	85-91
11	A Study on the Impact of Gamification Practices in HR On Employee Career Development in Automobile Industry. **Author:** *P. Sarah Angeline. Mount Carmel College, Autonomous # 58, Palace Road, Bengaluru- 560052*	92-101

M.E.S. Institute of Management & Research, Rajajinagar, Bangalore

HIGHER EDUCATION AND EMPLOYABILITY IN INDIA

Smt. Rohini Patil
Assistant Professor,
MES Institute of Management

Abstract:

This paper focuses on the relationship between higher education and employability in India. It evaluates the employability of graduates in Indian Higher education system focusing upon the challenges our education system is facing. India has the largest number of young people with higher unemployed rate.

Educating skilling and productive employment should become the matter of highest priority. Higher education is a path way to country's development. Any economic success is dependent on the country's education system.

It has been observed and remarked that, the recent graduates from various Institutions are not employable.it is within this context this article intends to contribute with the critical discussion on issue of graduate' employability.

***Keywords**: Higher education, skills, employability*

Introduction:

Education in broad sense is everything that is learned and acquired in life time: habits, knowledge skills, interests, attitudes and personality. Education is the process by which people's abilities and talents are developed. In narrow sense, education is the systematic, organized, process of teaching and learning that centers largely in some form of schools.

Education benefits the individual as well as society in which he lives. Education has acquired great importance in all society it helps to prepare the men and women who direct and carry out the varied activities required in a modern society. Education is considered to be essentials in a modern democratic society.

M.E.S. Institute of Management * 10. Rajajinagar, Bangalore

Sharada S
Principal
MES Institute of Managemen
Rajajinagar Bangalore-560 010

SMART LIBRARY:
EMERGING TRENDS AND TECHNOLOGIES

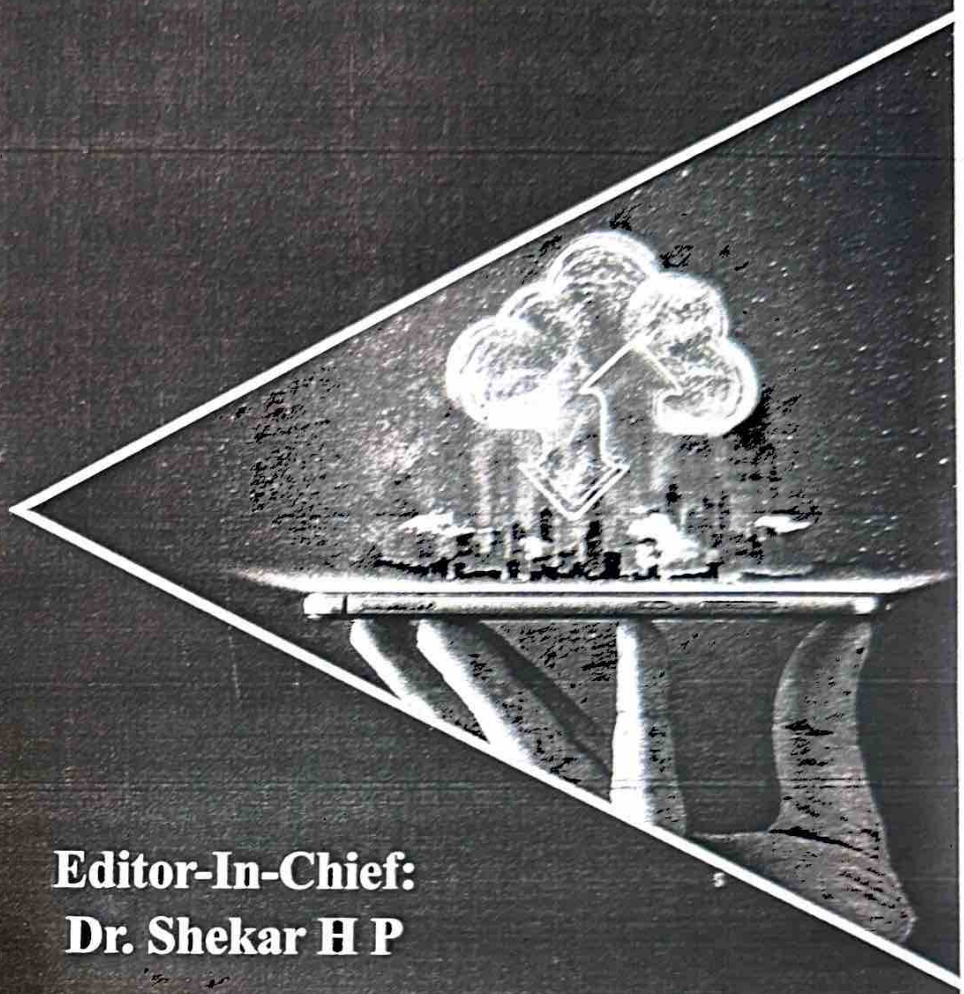

Editor-In-Chief:
Dr. Shekar H P

Editors:
Dr. Meeramani N
Mr. Manjunath N
Dr. Chaithra N
Mr. Prithviraj
Dr. Shobha Patil

JAIN
UNIVERSITY PRESS

SMART LIBRARY: EMERGING TRENDS AND TECHNOLOGIES

Editor-In-Chief:

Dr. Shekar H P

Editors:

Dr. Meeramani N
Mr. Manjunath N
Dr. Chaithra N
Mr. Prithviraj
Dr. Shobha Patil

M.E.S. Institute of Management * Rajajinagar, Bangalore - 10. *

JAIN UNIVERSITY PRESS

Smart Library: Emerging Trends and Technologies - Collection of papers, edited by: Dr. Shekar H P, JAIN (Deemed-to-be University) Bengaluru, India (2023)

© Jain University Press
All Rights Reserved

First published in India in 2023
by
Jain University Press
Jakkasandra Post, Kanakapura Taluk
Ramanagara District- 562 112

ISBN 978-93-85327-70-4

Printed by Jain University Press

M.E.S. Institute of Management • Rajajinagar, Bangalore - 10. •

Reviewers:

Dr. Krishnappa M
Prof (Dr.) Gopakumar V
Prof (Dr.) Sampath Kumar B T
Dr. Mallikarjun Angadi

This book is circulated/sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated/sold without prior permissions of the publishers in any form of binding or cover other than that in which it published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above. No part of this publication can be reproduced, in or introduced (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior permission in writing from the copyright owners and publishers of this publication.

15	Implementation of Koha Library Management System in DVS Evening College Library: A Case Study -*Niranjana K and Manu Murthy*	122
16	Digitization of Library Rare Books: A Case Study - *Vishala B K*	135
17	Ebharatisampat: A Case Study of Samskrit Digital Library - *Kavitha Biradar*	145
18	Analysis of various latest Data Storage Technologies - Hamela K & Venugopal M	150
	Section III. Data Storage and Management	
19	Application of cloud computing in libraries: problems and perspectives -*Vinay Kumar E S, Shivaraja O & Ananda S K*	159
20	Cloud Computing And Its Application In Libraries: Opportunities and Challenges and issues - *Veda L Shetty*	167
	Section IV. Library Sustainable Development	
21	Open Education Resources: A Boon for Education in India –*Channankegowda*	175
22	Open Educational Resources and Life Long Learning with Smart Digital Libraries -*Vivekanand Jain*	180
23	Development of Open Education Resources (OER) in India - *Chaithra A M*	186
24	Use of Open Educational Resources (OER) by the Users in Government First Grade Colleges Affiliated to Bengaluru City University: A Case Study - *Konduru Jamuna*	195
25	User Perception and Usage of Open Educational Resources by Management Students of JAIN (Deemed-to-be University), Bengaluru - *Shobha Patil & P G Tadasad*	206
	Section V. Research Data Management-RDM	
26	Research Data Management System: With Special Reference to Smart Libraries - *Shivananda Bulla, Ragini Chandrashekar, Srinivas V Shenvi, Arvind S Nayak, Srinivas Harikanth & Archana Bhat*	218
27	Research Productivity and Authorship Pattern in Lis Scholarly Journal: A Bibliometric Study - *Shivakumara S U & Sampath Kumar B T*	226

Chapter 20. Cloud Computing and its Application in Libraries: Opportunities, Challenges and Issues

▪ *Veda L Shetty*

Abstract

Applications for computers are in some form platform dependent. The cloud is a computer network platform that operates based on applications and connects computers via the internet. It is a move from the traditional library service approach to a technologically advanced and user-friendly service. Libraries are evolving into data centres by utilizing more and more computer resources for smooth operations. Cloud computing minimizes capital expenses as there is no need for extra computers or data centre installations. Cloud services run on a globally upgraded network for fast, accurate, secure, and efficient computer software and hardware. This makes it more beneficial than traditional centralized data centres in terms of minimum downtime and cost effective use of ICT resources in library management. This paper aims to examine the importance of cloud computing in terms of applications, opportunities for user service, and challenges in implementation and data retrieval through this internet-based platform.

Key Words: *Cloud Computing, IaaS, PaaS, SaaS, LMT, ICT.*

Introduction

Traditionally, ICT devices are costly due to installation, configuration, manpower, and in-house maintenance. In modern library management, owning and running a server requires significant hardware and software and requires technical expertise in libraries. This creates challenges in all aspects of library operations during automation. This is known as the "pre-cloud" model of library automation. The cloud-based model, however, changes the landscape of computer hardware and software, with library data stored online rather than on a local server. Cloud computing is the future of internet

M.E.S. Institute of Management, Rajajinagar, Bangalore - 10.

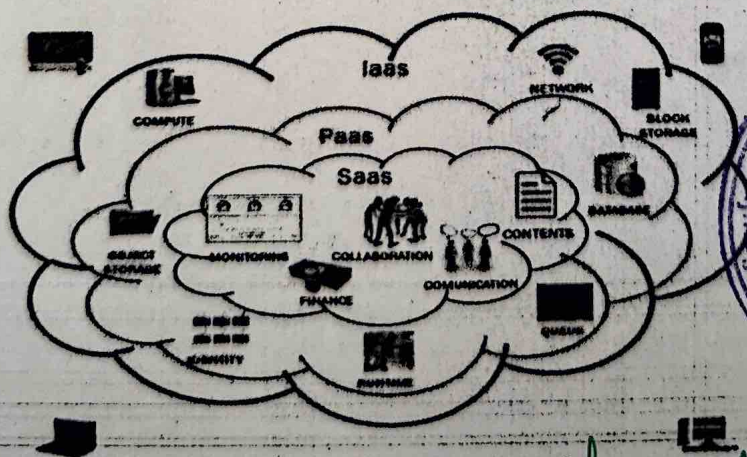

Sharadas
Principal
MES Institute of Managemen
Rajajinagar Bangalore-560 010